राज
कॉमिक्स
विशेषांक
मूल्य 20.00 संख्या 241
आतंक
नागराज

कथा:	चित्र:	इंकिंग:	सुलेख एवं रंग संयोजन:	सम्पादक:
जॉली सिन्हा.	अनुपम सिन्हा.	विनोद कुमार.	सुनील पाण्डेय.	मनीष गुप्ता.

महानगर स्थित 'वेदाचार्य भविष्यधाम' में-
कूssss
छुक छुक छुक!
आssssह! थक गए राज भइया!
बोर भी हो गए!
तो फिर बैठकर कहानी सुनाऊं?
और बोर मत करो राज भइया!
ये सुस्त खेल खेलने से हमको भी सुस्ती आ रही है! कुछ फास्ट खेलो न!
राज भइया सूट पहनकर भला फास्ट गेम कैसे खेलेंगे! नागराज को बुलाओ!
सुपर आइडिया!
नागराज!

ये क्या हो रहा है? तुम सब चिल्ला क्यों रहे हो?
सॉरी दीदी!
लेकिन यह तो पढ़ाई का वक्त है! खेल क्यों हो रहा है?
उधर देखो न, भारती दीदी!
घर्र
यहां पानी की प्रॉबलम को सॉल्व करने के लिए राज भइया, बोरिंग करवा रहे हैं! और पथरीली जमीन में छेद करने के लिए जो ड्रिलिंग मशीन आई है, वह इतना शोर कर रही है कि हम पढ़ ही नहीं सकते!
र्र्र्र्र्र्र्र
ओह!
लेकिन मुझे किसलिए बुलाया है, बच्चों? यहां पर किसको खतरा है?
नागराज!
हमने तो तुमको अपने साथ खेलने के लिए बुलाया है, नागराज!
खेलने के लिए? यह तो तुमने गलत काम किया, बच्चो!
यह सच है कि बच्चे मुझे बहुत प्यारे हैं! मैं बच्चों के साथ खेलना चाहता हूं, और उनको खुश देखना चाहता हूं!
लेकिन यह भी सच है कि मैं एक 'क्राइमफाइटर' हूं! अपराध का विनाश करके एक स्वच्छ समाज की स्थापना करना मेरा लक्ष्य है!
तुमने मुझे अपना समय बिताने के लिए बुलाया!
हो सकता था कि इस वक्त मैं किसी अपराधी से लड़ रहा होता...

या किसी इंसान को मौत के मुंह से बचा रहा होता! या फिर... कोई और जरूरी काम कर रहा होता!
हमसे गलती हो गई! हमको माफ कर दो, नागराज!
अब हम तुमको जरूरत पड़ने पर ही बुलाएंगे!
प्रॉमिस?
प्रॉमिस, नागराज!
तो फिर मुंह लटकाए क्यों खड़े हो? चलो खेलते हैं!
याssssss
पर हम खेलेंगे क्या? गेम्स रूम की चाबी तो राज भइया ले गए!
और फिर-
नागराज तो हम सबकी शॉट एकसाथ रोक ले रहा है!
कम से कम 'सर्प बॉल' को तो 'गोल' में जाने दो, नागराज!

इस वक्त बच्चों के साथ, बच्चा बने हुए नागराज को देखकर कोई सोच भी नहीं सकता कि ये वो जहरीला फौलाद है, जिसे सिर्फ देखकर ही अपराधियों और आतंकवादियों के होश उड़ जाते हैं!
सिर्फ नागराज को ही देखता रहेगा, पांडुया, या पानी भी निकालेगा!
ये 'टू इन वन' ड्रिलिंग मशीन जरा भी आराम करने नहीं देती! फटाफट ड्रिल कर देती है, और फिर गंदा पानी बाहर निकालने लगती है!
ये नहीं सोचता कि दो दिनों का काम एक दिन में हो जाता है! हर वक्त गलती ही...
... अरे! पानी आना बंद हो गया!
कुछ गंदगी फंस गई होगी! 'सक्शन-मशीन' का प्रेशर बढ़ाओ!
बढ़ा रहा हूं, उस्ताद! लेकिन फंसने वाली चीज बहुत मोटी है!
टाइम लगेगा!
ये... ये क्या फंसा हुआ है, पाइप में?
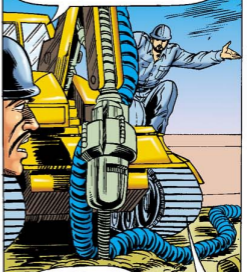
ये... कौन सी दुनिया है?
नागराज! ये बोरिंग का पाइप फाड़कर निकला है!
नागराज!
पानी के साथ-साथ एक अंडर-ग्राउंड मुसीबत भी ऊपर आ गई है, बच्चो!
यहीं रहना! मैं अभी आया!
इसको छोड़ दो भई! दुनिया के दर्शन तुमको मैं कराता हूं!
तूने... तूने एक मामूली इंसान होकर 'हुंकारा' पर वार करने की हिम्मत की?

हंकारा तुझे इसकी सजा देगा! ... जरूर देगा!
ओह! किरण वार कर रहा है! कर ले! ऐसे वार तो नागराज रोज ही झेलता है!
अरे! अरे! मेरा एक सर्प बगैर मेरे आदेश के मेरे शरीर से निकल कर यह वार झेल रहा है!
पर क्यों?
मेरे आदेश पर नागराज! और तुम्हारी 'क्यों' का जवाब तुम्हारे सामने है!
अभी ये हालत तुम्हारी होने वाली थी! यह जादुई वार था!
ओह! धन्यवाद सौडांगी!
अभी मैं अति आत्मविश्वास के चक्कर में मारा जाता!
मारा तो तू जाएगा ही नागराज! ... तू अपनी मौत को सिर्फ थोड़ी देर के लिए टाल सकता है! हमेशा के लिए नहीं!
बड़ाम

मेरा जादुई वार तुझे विखंडित कर देगा! हवा में घुल जाएगा तू!
व्हीम् छीक छू!
देखा? घुल गया न!
मर गया नीच मानव!
तुम्हारी जुबान बहुत गन्दी है, इसीलिए तुम्हारी भाषा भी खराब है! मैं अभी इसको बाहर खींचकर साफ कर देता हूं!
फ़ssss
अरे! अरे! तू बच कैसे गया! वापस कैसे आ गया? यह तो असंभव है!
आsssह!
तेरा वार लगने से पहले मैं खुद ही कणों में बदल गया था, हंकारा!
टक
अब तू मंत्र बोल कर जादुई हमला नहीं कर सकता!
मेरी जीभ! ईssss! मेरी जीभ खींच ली इसने! अब मैं जादुई वार करने के लिए मंत्र नहीं बोल सकता! लेकिन हंकारा सिर्फ जीभ का मोहताज नहीं है! मेरे पास और भी शक्तियां हैं! जादुई सींग है मेरे पास!
मैं तेरे मस्तिष्क में सूक्ष्म सर्प भेजकर यह जान लूंगा कि तू है कौन, और तेरा मकसद क्या है?

नागराज को सर्प छोड़ पाने का मौका ही नहीं मिला-
आssss ह! ये... ये क्या ? इसका सींग धंसते ही जमीन में एक अजीब सी ऊर्जा दौड़ रही है!
लेकिन ये ऊर्जा मुझे कोई नुक्सान नहीं पहुंचा रही है!
धड़क
तो फिर इस ऊर्जा का मतलब क्या है...?
आssss ह!
नागराज की नजरें उठीं-
और उसका दिल दहल गया-
आssss ह! यह क्या ? मैं देख रहा हूं, पर यकीन नहीं कर पा रहा हूं!
वेदाचार्य भविष्यधाम की इमारत जिन्दा हो उठी है! और मुझ पर हमला कर रही है!
यह तो जादू है!

लेकिन तू सफल नहीं होगा, हंकारा! नागराज तेरे जादू को तोड़ देगा! तेरे जादू से बनी हर चीज को तोड़कर!
नहीं कर पाएगा, नागराज!
क्योंकि अब तो मेरी जीभ फिर से उग आई है!
तू तो 'भवनजीव' के वारों को अपने तक पहुंचने ही नहीं दे रहा है! एक बार 'भवन जीव' तुझको निगल जाए तो तू मेरा जादू तोड़कर कभी बाहर नहीं आ पाएगा...
... लेकिन 'भवनजीव' तुझे निगलेगा कैसे? हां, एक रास्ता है!
अरे! अरे!
ये 'भवनजीव' मुझे छोड़कर बच्चों की तरफ लपक रहा है! उनको अपने अन्दर खींच रहा है!
वेदाचार्य
हां, नागराज! अब तू खुद जाएगा 'भवनजीव' के मुंह के अन्दर!
क्योंकि मैं देख चुका हूं कि बच्चों से तुझको कितना प्यार है!

जरूर जाऊंगा! ये तो सिर्फ भवन-जीव का मुंह है! मासूम बच्चों को बचाने के लिए तो मैं मौत के मुंह में भी कूद सकता हूं!
हा हा हा! घुस गया नीच मानव, भवनजीव के अन्दर! अब यह बाहर कभी नहीं निकल पाएगा!
अब मुझे यह यंत्र ले जाने से कोई नहीं रोक सकता! यह भूमिगत जल को निकाल देगा, और रक्ष शिरोमणि विभत्सू आजाद हो जाएंगे!
हा हा हा हा! भाग्य हमारे साथ है! मानवों के साथ नहीं!
चल मेरे साथ!
नागराज, भवनजीव के अन्दर मौत से जूझ रहा था-
नागराज!
घबराओ मत बच्चो! मैं आ रहा हूं... ओह! सर्प मुझे जकड़ रहे हैं!
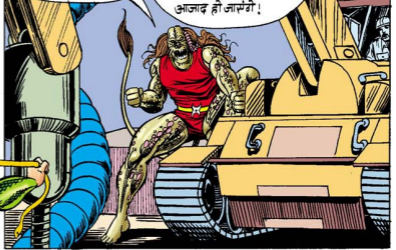
मैं अभी इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग करके आजाद हो जाता हूं!... अरे!
मेरे इच्छाधारी कण इस जादुई शिकंजे के पार नहीं जा पा रहे हैं! और तीन पलों के बाद...
... मुझे सामान्य रूप में आना ही पड़ेगा...
...आऽऽऽह!
ये टुकड़े तो मेरी हड्डियां तोड़ डालेंगे!
उधर बच्चों की कैद का दरवाजा भी बन्द हो रहा है!
शारीरिक शक्ति के प्रयोग के अलावा और कोई रास्ता नहीं है!
ये सरिये मुझसे लिपटे तो रह सकते हैं, लेकिन मैं इनको दीवारों से अलग कर दूंगा!
अब सबसे पहले बच्चों को इस कमरे से निकालना होगा! ... आऽऽऽह!
इस दीवार पर तो मेरे वार का असर ही नहीं हो रहा है!
ध्वंसक सर्प भी बेअसर है!
अब क्या करूं?
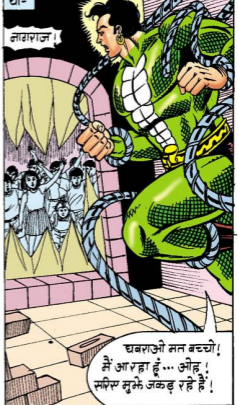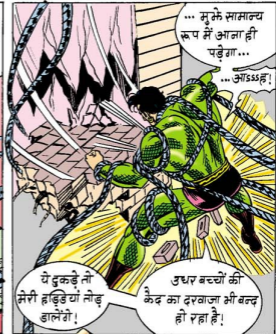
नागराज! हमको बचाओ, क... कमरा छोटा होता जा रहा है! दीवारें हमको पीसने के लिए हमारे पास आती जा रही हैं!
यहां पर भी यही हो रहा है, बच्चों! पर घबराओ मत! मैं तुमको एक खरोंच तक भी नहीं लगने दूंगा!
धड़ाक
क्या करूं? ये दीवार तो हिल तक नहीं रही है! जादू को जादू ही काट सकता है!
इस जादुई दीवार को तोड़ेगी, जादुई सलाखें!
नागराज!
घबराओ मत बच्चों! मैं आ गया हूं!
मैं अभी तुम लोगों को यहां से बाहर ले... आऽऽऽह!
जमीन हिल रही है, नागराज!
भवनजीव हिल रहा है! डरो मत, बच्चों!
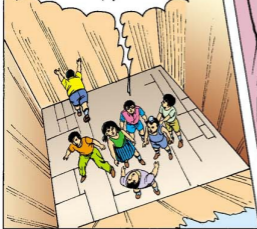
मुझ पर कसे सरियों के शिकंजे खुल गए हैं! यानी... भवनजीव मुझे जहां पर लाना चाहता था, वहां पर ले आया है! पर कहां?
बिल्डिंग हिलती जा रही है! और अब पानी के टूटे पाईपों से पानी भी निकलकर यहां भर रहा है!...
... शायद भवनजीव हमको डुबोकर मारना चाहता है!
लेकिन—
नागराज! मेरे बदन में जलन हो रही है!
मेरे भी!
समझा! हम भवनजीव के पेट में हैं! ये भोजन पचाने वाले रसायन हैं, पानी नहीं! और हमको हिलाया इसीलिए जा रहा है, ताकि हमको ये रसायन जल्दी घोल सकें! ओह! चाहे खुद मर जाऊं, लेकिन बच्चों को तो बचाना ही होगा!... पर कैसे?

राजनगर भी इस मुसीबत का एक हिस्सा बनने वाला था-
STATIONERS
P.K. Jwellers
ध्रुव, सर! वो दोनों गुंडे ज्वेलरी शॉप से करोड़ों का माल लूट-कर और एक गार्ड को घायल करके फरार हो रहे हैं!
मुझे सूचना दो मिनट पहले मिल गई थी! इस ट्रैफिक में इनका भाग पाना असंभव है! ये जल्दी ही पकड़े जाएंगे!
ध्रुव पीछे लग गया है, धीधड़े!
लगने दे! हमारा प्लान फुलप्रूफ है! हमको कोई नहीं पकड़ सकता!
वो पुल पर आ गए हैं, सर!
गुड! पीछे ध्रुव है, और आगे हम!...
...अब तो समझो कि ये पकड़े गए!
लेकिन-
धड़ाक
हा हा हा! अब समझा! हमारा प्लान! अब हम जहां चाहेंगे, वहां पर बाहर निकलेंगे!
पानी में हमको कौन पकड़ेगा?
छपाक
ध्रुव!
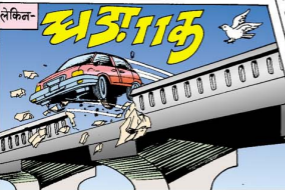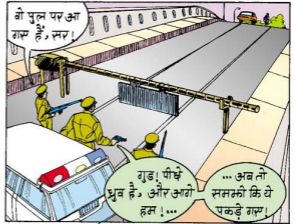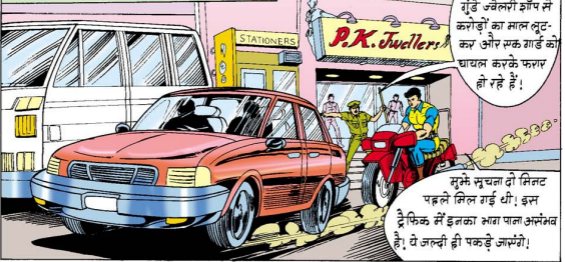
ध्रुव हमको कैसे पकड़ेगा? वह इतनी जल्दी मॉस्क और सिलेंडर ला ही नहीं सकता! और जब तक वह डुबकी मारने का सामान लाएगा...

ध्रुव पानी में सांस ले सकता है, छीछड़े!

क्या? तूने पहले क्यों नहीं बताया?

तूने पूछा ही नहीं?

लेकिन कैसे? कोई इंसान पानी में सांस कैसे ले सकता है? वह मछली है क्या?

मछली पकड़ने वाला है! सुना है कि किसी जादूगर ने उसके गले में कोई यंत्र फिट कर दिया है! और वह यंत्र पानी को भी ऑक्सीजन में बदल देता है! ❂
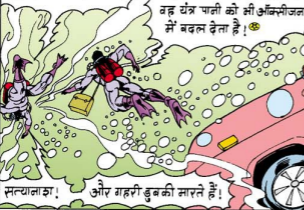
सत्यानाश!

और गहरी डुबकी मारते हैं!

ध्रुव, लुटेरे के पीछे पड़ा था-

ये नदी काफी लंबी और गहरी है! कई जगहों पर तो हजारों मीटर की गहराई है! इतनी लंबी और गहरी नदी में उनको कहां ढूंढूं?

एक तरीका है! वे पानी में बगैर ऑक्सीजन सिलेंडर के नहीं रह सकते! और जहां ऑक्सीजन सिलेंडर होगा, वहां बुलबुले भी होंगे! जो सतह पर आएंगे!

सारी चिड़ियों को सतह पर के बुलबुले ढूंढने के काम में लगा देता हूं!

जल्दी ही-

आहा! ये रहे बुलबुले!

वे अपराधी ठीक इस जगह के नीचे हैं!

❂ इस सम्बन्ध में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें: ग्रैंडमास्टर रोबो

कहानी 19 पेज से जारी

जल्दी ही-
छीछड़े! ये तो हमारे पीछे आ गया!
मर गए! किस बुरी घड़ी में मैंने लूट के माल का बैग तेरे पास छोड़ दिया था! खैर, अब जान तो बचाऊं!
ये तो अब अपने आप सतह पर जाकर ही रुकेगा, जहां पुलिस इसका इंतजार कर रही है!
लेकिन ये छीछड़े तो और गहराई में उतरता जा रहा है!
छीछड़े को जान बचाने के अलावा और कुछ नहीं सूझ रहा था-
य... यह क्या है? यहां का पानी कुछ अजीब सा लग रहा है!
पूरे शरीर में झटके से लग रहे हैं! नसें जैसे खिंचती जा रही हैं!
मैं बदल रहा हूं! शैतान बन रहा हूं, मैं! शैतान!
हा हा हा हा!
और मैं जानता हूं कि अब मुझे क्या करना है!

मुझे संसार में उत्पात मचाना है! आतंक फैलाना है दुनिया में!
आऽऽऽह! यह क्या हो गया? इसका रूप बदलकर इतना भयंकर कैसे हो गया? और... और ये आतंक फैलाना क्यों चाहता है?
कुछ भी हो! मुझे इसको पानी के अंदर ही रोकना होगा! मैं इसको राजनगर में तबाही फैलाने नहीं दूंगा!
इतने शक्तिशाली प्राणी को मैं रोकूं तो कैसे? ये तो मुझे खींचता ले जा रहा है!
लेकिन कैसे?

इसको रोकने के लिए कोई भारी चीज चाहिए! लंगर जैसी चीज! हां, मिल गई ऐसी चीज!
ये डूबी हुई कार!
धीधड़े का ऊपर बढ़ना एकाएक रुक गया-
आऽऽऽ ह! धीधड़े का दम घुट रहा है! हवा चाहिए! सांस चाहिए धीधड़े को!
ये डोरी तो काफी मजबूत है! और लिपटी भी कसकर है!
इस बोझ को हटाना होगा!
हटाना होगा!

ओफ! ये तो आग छोड़ता है! अब इसको कैसे रोकूं?
ध्रुव सोचता ही रह गया-
और छीछड़ा सतह पर पहुंचकर अपने फेफड़े को हवा से भरने लगा-
ये... ये कौन है? खतरनाक लगता है!
शूट हिम!
हो हा हा हा! आग फेंकने वाले पर आग छोड़ रहे हो! मैं नहीं लेता!
तड़तड़ तड़ तड़ तड़
वापस ले लो! ही हा हा हा!
छीछड़े पर आग असर नहीं करती! छीछड़ा ठंड से मर सकता है! कड़कती खून जमा देने वाली ठंड से! जो यहां पर है ही नहीं!

तूने अपनी कमजोरी खुद ही बता दी है, धीधड़े! अब तू नहीं बचेगा!
करीम! 'सुपर कूल लिक्विड' का इंतजाम करो! और उसको लेकर जल्दी से जल्दी गांधी पुल पर पहुंचो!
इस पुल पर तो क्या, अब कोई घर से बाहर ही नहीं निकल पाएगा!
आsssह!
धीधड़ा ढाएगा कहर, और बचाने की गुहार लगाएगा यह शहर! तब धीधड़ा उनको बताएगा बचने की जगह!
आsssह! आग के गोले पानी को खौलाकर जादुई भाप में बदल रहे हैं, जो पूरे राजनगर में फैल रही है!
मैं झुलस रहा हूं! सतह का पानी भी खौल रहा है! पानी में और नीचे जाना पड़ेगा! लेकिन राजनगर को इस उबला देने वाली भाप से कैसे बचाऊं? अब तो इस राक्षस को ठंडा कर सकने वाली कोई भी चीज न मंगाई जा सकती है, और न ही लाई जा सकती है!
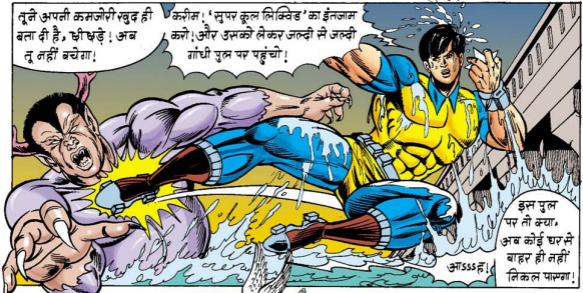
नागराज के सर्पों के अंदर भी नागराज जैसा ही विष मौजूद है

ओह! इस ईमारत को फिर से पहले जैसा 'मृत' किया जा सकता है! इसमें जीवन उस सींग के कारण दौड़ रहा है, जिसे हंकारा ने जमीन में धंसाया था! उसको बाहर निकालने से ये ईमारत फिर से आम ईमारतों की तरह जड़ हो जाएगी! ... लेकिन उसको निकालने के लिए मैं यहां से बाहर कैसे निकलूं?

ओह! मुझे बाहर निकलने की जरूरत नहीं है! मैं शहर भर में फैले अपने जासूस सर्पों को संकेत भेजता हूं!

"वे उस सींग को जमीन से बाहर खींच निकालेंगे-"

"और वेदाचार्य भविष्यधाम की बिल्डिंग फिर से सामान्य हो जाएगी-"
वेदाचार्य
भविष्यध
"थोड़ी टूट-फूट के बावजूद भी ईमारत सही-सलामत है-"

बस, बच्चों! खतरा टल गया है! अब हम सुरक्षित हैं!
क्या भूकंप आया था, नागराज?
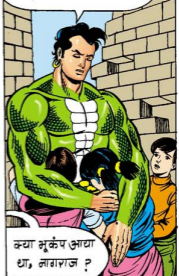
भारती! मुझसे ज्यादा तो इन बच्चों को पता है! तुम इनसे ही पूछ लेना!
मुझको उस शैतान से निपटना अभी बाकी है, जिसने इस मुसीबत को पैदा किया था!
हुंकारा गायब है, और साथ में वह ड्रिलिंग मशीन भी! लेकिन जमीन पर मशीन के निशान साफ नजर आ रहे हैं! निशानों का पीछा करता हूं!
राजनगर वासियों पर बड़ी मुसीबत टूट पड़ी थी-
ओफ्! ये भाप कहां से आ रही है? सांस लेना तक मुश्किल हो रहा है!
सारा शरीर झुलस रहा है!
ध्रुव भी असहाय था-
ओफ्! पानी तो और गर्म होता जा रहा है! पानी में और नीचे गया तो शायद मेरा हाल भी चीथड़े जैसा हो जाएगा!
अब मैं न तो नीचे जा सकता हूं, न ऊपर और न ही यहां पर रुक सकता हूं!
यह क्या...? ओह! शायद ये चीथड़े को काबू में कर सकें!
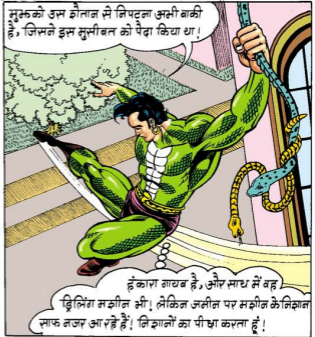
छीछड़ा, राजनगर पर कहर बरपा रहा था-
हा हा हा हा! अब तक ये मानव त्राहिमाम्- त्राहिमाम् करने लगे होंगे! अब मैं नगर में जाकर उनको बताऊंगा वह स्थान, जहां पर जाकर उनकी जान बच सकती है!
पहले अपनी जान बचाने की सोच, छीछड़े!
ध्रुव! तू अभी तक उबला नहीं? कमाल है!
ले, मैं तुझको अभी उबाल देता हूं! तेरी खाल, तेरे शरीर से वैसे ही अलग हो जाएगी, जैसे उबले आलू पर से उसका छिलका!
गर्मी तुम्हारे दिमाग पर चढ़ गई है!...
...उसको ठंडा करना पड़ेगा! इस सिलेंडर में भरी हाई प्रेशर लिक्विड ऑक्सीजन द्वारा जो कि अत्यधिक ठंडी होती है!
कट्
आsss ह! आsss ह! दिमाग सुन्न हो रहा है! भाप बननी भी बन्द हो रही है! ... लेकिन मैं हार नहीं मानूंगा! चारों तरफ फैली गर्मी इस ठंड को जल्दी ही दूर कर देगी!
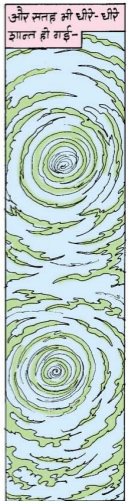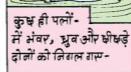
उससे पहले मैं तेरे होश को तुझसे दूर कर दूंगा!
ध्रुव के वार शक्तिशाली तो थे-
लेकिन इतने नहीं कि एक राक्षस को बेहोश कर सकें-
आऽऽऽह!
अब तू नहीं बचेगा तुझे फाड़ डालूंगा मैं!
अरे, अरे, यह क्या हो रहा है? पानी में भंवर कैसे पैदा हो रहा है? य... यह मुझे नीचे खींच रहा है!
मेरे नीचे भी भंवर बन रहा है! यह प्राकृतिक नहीं लगता! किसका काम हो सकता है ये? किसका... गड़ब...
कुछ ही पलों में भंवर, ध्रुव और छीछड़े दोनों को निगल गए-
और सतह भी धीरे-धीरे शान्त हो गई-

नागराज 'ड्रिलिंग मशीन' के निशानों का पीछा करते-करते महानगर से दूर आ गया था-
यह तो मैं 'नेशनल फारेस्ट' में आ गया हूं! महानगर और राजनगर के बीच में फैला हुआ जंगल! लेकिन हंकारा ड्रिलिंग मशीन को यहां क्यों लाया है?
यह रहा हंकारा! ड्रिलिंग मशीन के साथ!
ये यहां की जमीन से पानी क्यों निकाल रहा है? कुछ चक्कर है! इसको रोकना होगा! तुरन्त!
नागराज! तू भवन जीव से बचकर कैसे आ गया?
अभी बताता हूं! पहले पाईप में सर्प सेना को फंसाकर पानी का बाहर निकलना तो रोक लूं! मशीन टूटने के बावजूद भी पानी को निकालती जा रही है! इसमें तेरा जरूर कुछ ऐसा भला होना है, जो नहीं होना चाहिए!
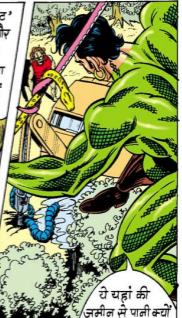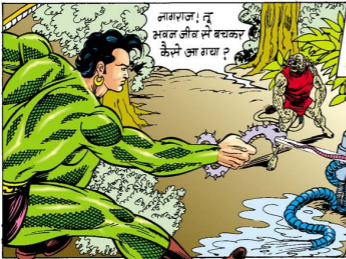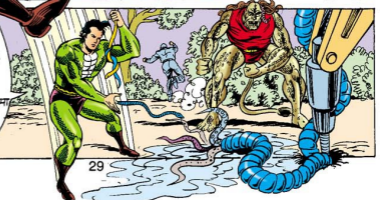
पानी का निकलना रुक गया है! सिर्फ तेरी जान का निकलना बाकी है!
आsss ह! तू विष फुंकार से मेरी जान जरूर ले सकता है, नागराज! लेकिन तुझे इसका मौका नहीं मिलेगा! क्योंकि तूने अपनी कब्र अपने आप ही खोद ली है!
अपने सर्पों का इस जल से स्पर्श कराके! इस जल ने जादू को अपने अन्दर घोला हुआ है! और अब वही जादू तेरे सर्पों के अन्दर घुल गया है!
और तेरे सर्पों के अन्दर राक्षसी शक्तियां घुस चुकी हैं! अब निपट ले अपनी मौत से!
मैं तब तक भूमिगत जल को बाहर निकालता हूं!

ओह! जादुई जल ने तो एक खूंखार प्राणी को पैदा कर दिया! मेरे ही सर्प अब अपनी फुंकार मुझ पर छोड़ रहे हैं!
जादुई फुंकार से मुझ पर बेहोशी छा रही है!
इस फुंकार को अपनी जहरीली फुंकार से काटना होगा!
नागराज की फुंकार का जादुई फुंकार से-
-मिलन होते ही-
आऽऽऽह! विस्फोट! मेरी फुंकार के साथ मिलते ही ये दोनों फुंकारें फट पड़ीं!
अगर मैंने एक पल पहले फुंकार छोड़ना रोक न दिया होता तो मेरा सर भी उड़ जाता!

इसकी फुंकार रोकने का एकमात्र रास्ता मेरी फुंकार है ! और उसका प्रयोग करने से मेरी अपनी जान जा सकती है ! इसकी फुंकार को रोकना होगा ! लेकिन इसको रोकूं तो कैसे ?
एक रास्ता है...
नागराज की आंखें चमक उठीं-
सम्मोहन, हवा में तैरने लगा-
और फुंकार छोड़ने वाले दोनों सर्पों को एक-दूसरे की सूरत में नागराज नजर आने लगा-
दोनों एक-दूसरे पर ही फुंकार उगलने लगे-
और उसी पल, उसमें नागराज की फुंकार भी शामिल हो गई-
दोनों सर्पों को अपनी फुंकार से अलग होने का मौका ही नहीं मिला-
और उस धमाके ने उनके चिथड़े उड़ा दिए-

कहानी 35 पेज से जारी
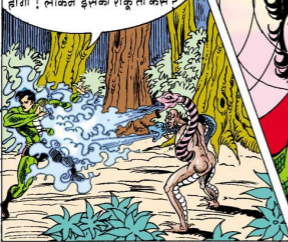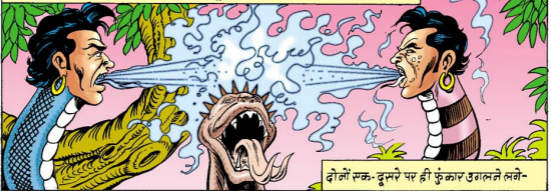
आश्चर्य की बात है! मेरी या मेरे सर्पों की फुंकार में तो कोई विस्फोटक क्षमता नहीं है! फिर इनकी फुंकार विस्फोटक क्यों थी? शायद ये जादू का असर था!
नहीं, नागराज! वे उस वक्त मेरे शरीर का अंग थे! और मैं 'ध्वंसक सर्प' का जादुई रूप हूं!...
... इसीलिए उनकी फुंकार में भी मेरे गुण समा गए थे! तू उनसे बच गया, लेकिन मुझसे नहीं बच सकता!
ओफ्! ये मुझको उलझाए हुए है, और हुंकारा भूमिगत जल को निकालता जा रहा है!
न जाने कौन सी मुसीबत आने वाली है!
उधर ध्रुव का शरीर भंवर के अन्दर खिंचता ही जा रहा था-
ओह! ये भंवर तो पानी के अन्दर ही काफी दूर तक बनी हुई है!
पानी खारा हो गया है! और शॉर्क जैसी मछलियां भी नजर आ रही हैं! मतलब साफ है! भंवर मुझे खींचती हुई समुद्र तक ले आई है!
ओह! ये इलाका तो मेरा देखा हुआ है! मैं समझ गया कि ये भंवर किसने बनाई है!
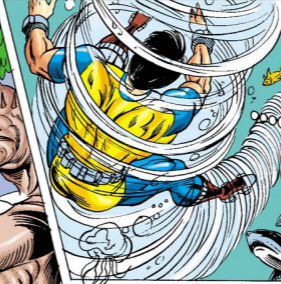
यह स्वर्ण नगरी वासियों का काम है! उन्होंने ही इस भंवर के द्वारा धीवड़े को खींचा है, और मुझे भी बुला भेजा है! लेकिन... उनको मुझसे क्या काम हो सकता है?
और फिर-
तुमको बुलाने का कारण यही है, ध्रुव! हमने राजनगर पर भाप के बादल देखे थे! उनमें एक खास जादुई ऊर्जा थी! उस जादुई ऊर्जा का कारण जानने के प्रयास में हमने तुमको और इस राक्षस को देखा! हम यह जानना चाहते हैं कि यह तुमको कहां मिला?
यह तो एक मनुष्य है! जो पानी में गोता लगाते-लगाते राक्षस बन गया! कैसे बना यह मुझे नहीं मालूम!
ओह! यानी तुमको सही स्थान का पता नहीं है?
सही स्थान? मुझे सारी बातें साफ-साफ बताओ!
यह देवजाति और रक्ष जाति की युगों पुरानी युद्ध गाथा का एक हिस्सा है, ध्रुव!...
... बात लगभग साढ़े तीन हजार साल पुरानी है!...
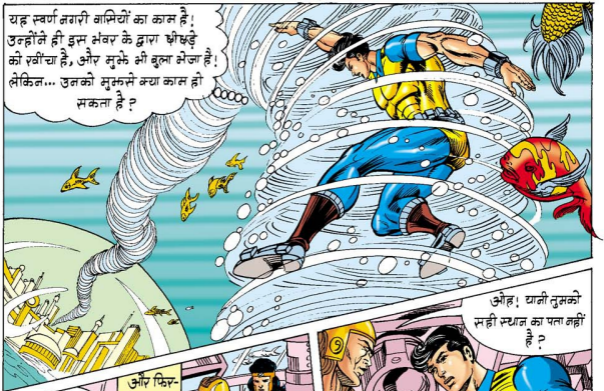
...जहां पर आज राजनगर और महानगर बसे हुए हैं, वहीं कहीं पर एक विशाल, शक्तिशाली और समृद्ध राज्य शिरोधरपुर हुआ करता था-
उस समय देवों का प्रभाव लगभग पूरी पृथ्वी पर फैल चुका था! पाप के रक्षक, रक्षजाति वालों यानी राक्षसों का लगभग विनाश हो चुका था! उनको अपनी संख्या और प्रभाव बढ़ाने की सख्त जरूरत थी! और राक्षसों के नायक विभत्सू ने इस काम के लिए शिरोधर पुर को ही चुना-
उसने शिरोधरपुर के पास में ही, गुप्त रूप से एक भूमिगत नगर का निर्माण किया! यह ऐसा मायावी नगर था, जिसमें प्रवेश करने वाला हर देव या इन्सान, राक्षस बन जाता था-
समस्या एक ही थी-
शिरोधर पुर की जनता को उस भूमिगत नगर में आने के लिए मजबूर कैसे किया जाए-
इसका रास्ता भी विभत्सू ने निकाल ही लिया-
उसने राक्षसी शक्तियों के द्वारा शिरोधरपुर में कहर फैला दिया-

और विभत्सू का खास आदमी हुंकारा वेष बदलकर मुसीबत में फंसे कई लोगों को सुरक्षित स्थान पर ले जाने का लालच देकर उनको भूमिगत नगरी में ले आया-
उस पाताल नगरी में पैर रखते ही वे सभी राक्षसी शक्तियों से युक्त हो गए-
और यह सिलसिला चलता रहा। शिरोधरपुर के वासी ही राक्षस बनकर, शिरोधरपुर में तबाही मचाते रहे-
और उनसे बचाने का झांसा देकर हुंकारा, शिरोधरपुर वासियों को पाताल नगरी में लाकर राक्षस बनाता रहा-
हमको जब तक इस बात का पता चला, तब तक पूरा शिरोधरपुर राक्षस जाति में बदल चुका था। अब एक ही रास्ता था। पाताल नगरी पर हमला करके उसको राक्षसों सहित नष्ट कर देना!
लेकिन यह काम आसान नहीं था। क्योंकि नगरी भूमिगत थी। बाहर से उस पर हमला कर पाना असंभव था!
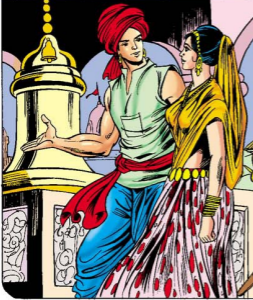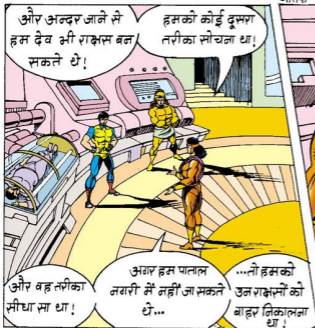
और अन्दर जाने से हम देव भी राक्षस बन सकते थे!
हमको कोई दूसरा तरीका सोचना था!
हम अपने हथियारों द्वारा भूकंप लाए! पाताल नगरी की आग से जलाने की कोशिश की! नगरी को धुएं से भरना चाहा!
लेकिन सभी प्रयास व्यर्थ रहे, राक्षस बाहर नहीं निकले!
और वह तरीका सीधा सा था!
अगर हम पाताल नगरी में नहीं जा सकते थे...
...तो हमको उन राक्षसों को बाहर निकालना था!
हमने जल द्वारा पाताल नगरी को भरने की कोशिश की! लेकिन यह प्रयास भी विफल रहा-
तब एक देव ने एक ऐसे 'ऊर्जा तीर' का आविष्कार किया, जिसकी ऊर्जा पानी में घुलकर ऐसे मिश्रण का निर्माण करती थी, जो जादुई ऊर्जा को भी घोल सकता था-
हमने उस तीर को धरती के गर्भ में छोड़ दिया! तीर की ऊर्जा, भूमिगत जल के साथ मिश्रित हुई, और तीर द्वारा बनी सुरंग से वह जल ऊपर आकर भूमिगत नगरी को भरने लगा! वह जल जादू को भी घोल रहा था, इसलिए राक्षसों की सारी जादुई शक्तियां उस पर विफल होती रहीं! और पूरी पाताल नगरी 'जल मिश्रण' से भर गई!
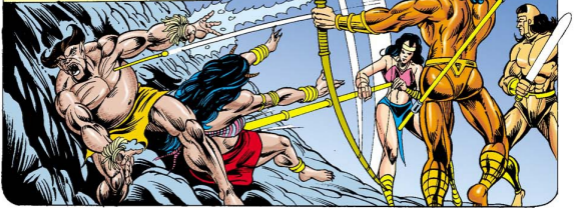
लेकिन साढ़े तीन हजार साल के बाद आज वह आतंक फिर से जाग उठा है! इस राक्षस के शरीर में वही तीर ऊर्जा मौजूद है, जिसने जल मिश्रण के जरिए राक्षसी ऊर्जा को सोख लिया था!

ओह! यह नदी में इतना नीचे चला गया था कि भूमिगत जल के संपर्क में आ गया होगा! यह वही जल होगा, जो पाताल नगरी में भरा गया था!

हमको सिर्फ एक ही डर है! विभत्सू का! अगर वह भी किसी प्रकार जिन्दा हो उठा तो इस बार वह सावधान होगा।

उसको नष्ट करना इतना आसान नहीं होगा!

उसको उठने से पहले ही नष्ट करना होगा! चलो मुझे नदी में वह स्थान दिखाओ, ध्रुव!

उसके बाद हम अपनी योजना बनाएंगे!

नागराज भी अंजाने में, विभत्सू को उठने से रोकने की कोशिशें कर रहा था-
हंकारा, पानी को बाहर निकालता ही जा रहा है! और मैं अपने ही ध्वंसक सर्प से जूझने के चक्कर में उस तक पहुंच ही नहीं पा रहा हूं!

इस शरीर के दो सांपों को मैं सम्मोहित करने में सफल रहा था! इसको भी अपने सम्मोहन जाल में ही फंसाता हूं!
आsss ह! आsss ह!
ये सम्मोहन तरंगें! मैं इस जाल में नहीं फंसूंगा, नागराज!
कोई फायदा नहीं है, ध्वंसक! कभी न कभी तो तू आंख खोलेगा ही! तब तू सम्मोहित हो जाएगा!
खच
मैं अपनी आंखें ही फोड़ लूंगा नागराज! फिर तू मुझे कैसे सम्मोहित करेगा?
तुझे मैं अभी भी अपनी जीभ से महसूस कर सकता हूं, नागराज! तू बच नहीं सकता!
ओsss ह! विष फुंकार तो मेरे अपने ही सर्प पर खास असर नहीं करेगी!...
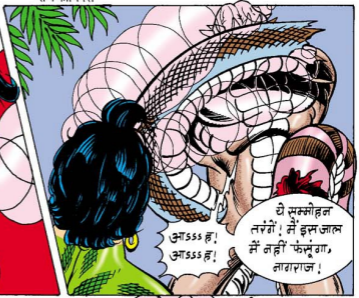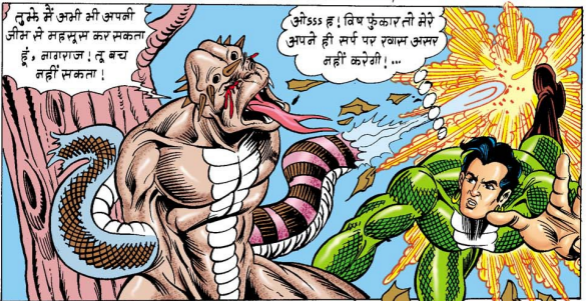
लेकिन शायद ध्वंसक सर्प अपने ही साथी को नष्ट कर सकें!
हा हा हा!
मुझे तो इनके शरीर से विस्फोट करने के लिए और तत्व मिल रहे हैं!
ओफ्!
वार उल्टा पड़ गया!
सम्मोहन वार नहीं कर सकता, ध्वंसक सर्प छोड़ नहीं सकता, फुंकार असर करेगी नहीं, तो फिर कौन सा वार करूं?
नागफनी सर्प इसको काट सकते हैं, लेकिन उनको भी ये अपने पास तक पहुंचने ही नहीं दे रहा है!
जमीन के नीचे से निकल रहा भूमिगत जल तेजी से चारों तरफ फैल रहा है! ध्वंसक मुझे इसी जादुई जल में गिराने की कोशिश कर रहा है!...
... ताकि मैं भी इसके जैसा ही बन जाऊं!... अगर जल्दी ही ध्वंसक मेरे काबू में नहीं आएगा...
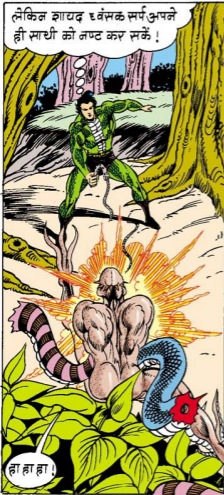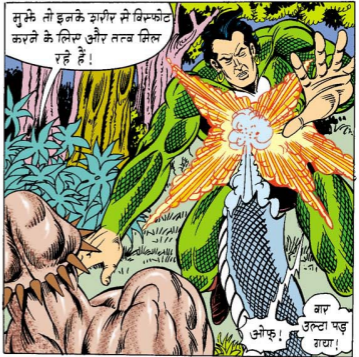
... तो शायद ये अपने इरादे में कामयाब हो जाएगा... ध्वंसक पर काबू पाने के लिए पहले मुझे इसकी 'विस्फोटक-शक्ति' का राज जानना पड़ेगा! और यह राज मुझे वे विशेष नागफनी सर्प बता सकते हैं, जिनके शरीर से ध्वंसक सर्प पैदा होते हैं!
नागराज को जल्दी ही जवाब मिल गया-
ओह! ध्वंसक सर्प, मुख्यत: ग्लिसरीन के बने होते हैं! और वायु के संपर्क में आते ही ये हवा से नाइट्रोजन को सोखकर शक्तिशाली विस्फोटक नाइट्रोग्लिसरीन का निर्माण करते हैं!
यानी अगर इसके शरीर का संपर्क हवा से काट दिया जाए, तो इसकी विस्फोटक शक्ति भी खत्म हो जाएगी!
यह काम शायद मेरी विष फुंकार कर सके!
फुंकार ने चारों तरफ से ध्वंसक को घेर लिया-
लेकिन-
ओह! यह तो मेरी घातक फुंकार को शर्बत की तरह पी रहा है!
अब क्या करूं?... हां! एक तरीका है! इसको जादुई जल के कारण बने कीचड़ में गिराना होगा!

कीचड़ में गिरने से इसके पूरे शरीर से कीचड़ लिपट जाएगा! और इसके शरीर का हवा से संपर्क कट जाएगा!...
...और ये 'विस्फोटक हमला' करने की स्थिति में नहीं रह पाएगा!
धड़ाक
अब तू मुझसे नहीं बचेगा, हंकारा!
पहले तू अपने-आप से बच ले, नागराज!
ओह! मैं जादुई जल में नहा गया हूं! अब मैं भी राक्षस बन जाऊंगा!

मुझे इस जादुई जल के असर से बचना होगा! लेकिन कैसे? समझा! इस जल का असर अभी मेरी त्वचा तक ही है! इससे पहले कि ये जल मेरे रोम छिद्रों के जरिए मेरे शरीर में घुसे...
खच
टच
... मैं जादुई जल से भीगी अपनी केंचुली उतार फेंकूंगा!
लेकिन ऐसा करने से मैं कमजोर भी हो जाऊंगा! मुझे ध्यान रखना होगा कि मैं जादुई जल में गिर न जाऊं!
अब तू गया नागराज!
अब तू मेरे जादुई वार से नहीं बच पाएगा!
आऽऽऽह!
मे... मेरी खाल सिकुड़ रही है! मेरी हड्डियों को दबा रही है!
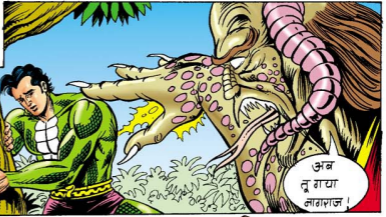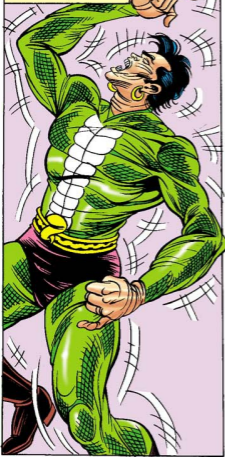
नागराज पर जादू असर करता जा रहा था-

ड्रिलिंग मशीन तेजी से पानी निकालती जा रही थी-

और पातालनगरी में भरे जल का स्तर घटता जा रहा था-
फू SSSSS
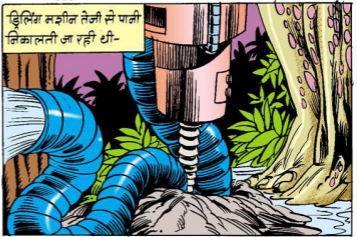
आSSSS ह!
मैं... मैं कितने युगों बाद उठा हूं? पता नहीं! देवों ने मेरी योजना को ध्वस्त कर दिया! लेकिन इस बार विभत्सु उनके जाल में नहीं फंसेगा!
पता करता हूं! कोई देव मेरी नगरी के आस-पास तो नहीं है!
है! ए... एक देव पाताल नगरी की सीमा पर है!

" उस सीमा पर, जिसका पता अब तक देवों को भी नहीं था-"
" लेकिन अब वह सीमा द्वार, एक नदी के तल में चला गया है! कमाल है! यानी मुझे सोए कई सदियां बीत चुकी हैं-"
" लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता! मैंने जो योजना सदियों पहले बनाई थी, वह अब पूरी होगी! सारे देव मरेंगे!...और शुरुआत इस देव से होगी-"
ये तुम मुझे कहां ले आए हो, ध्रुव?
यहां पानी में न तो उस तीर ऊर्जा का कोई चिन्ह है, और न ही जादुई राक्षसी ऊर्जा का!
जगह तो यही है धनंजय! मुझे अच्छी तरह से पता है!
लेकिन वह जादुई जल न जाने खिंचकर कहां चला गया है?
जादुई जल सचमुच खिंच रहा है, देव! क्योंकि पाताल नगरी के ऊपर उग आए जंगल में, एक यंत्र के द्वारा भूमिगत जल को बाहर निकाला जा रहा है!
राक्षस आजाद हो रहे हैं! तुम देवों को बन्दी बनाने के लिए!
विभत्सू! तू... तू फिर से जाग गया!
हां! अगर विभत्सू जागता नहीं, तो देव मौत की नींद सोते कैसे?
ले, भेज रहा हूं मैं तेरी मौत को!

ओह! हम पर ये कैसी मुसीबत छोड़ दी विभत्सू ने! मैं इसके लिए तैयार होकर नहीं आया था!
लेकिन इसको रास्ते से हटाए बगैर हम कुछ नहीं कर सकते, धनंजय! तुम्हारे पास तो देव शक्ति है! नष्ट कर दो इसको!

मेरा 'स्वर्ण पाश' जिसको अकड़ लेता है, वह 'स्वर्ण-पाश' का गुलाम बन जाता है!
शायद इसको भी 'स्वर्ण-पाश' गुलाम बना सके!
हा हा हा! फूंक से बादल को उड़ाना चाहता है! षटपाद को इस मामूली रस्सी से गुलाम बनाएगा तू?
ओह! मुझसे स्वर्ण-पाश छूट गया!
देख! षटपाद अभी भी अपनी मर्जी का मालिक है!
और मेरी मर्जी तुम दोनों की मौत है!
ओह! हमारे शरीर के चारों तरफ का पानी जम रहा है! हम बर्फ में ढकते जा रहे हैं! सिर्फ हमारे सिर बर्फ से बचे हैं!
सिर्फ सिर ही क्यों?

ताकि ये हमारे सिरों को धड़ से उड़ा सके, और हम कुछ न कर सकें!
मेरी 'मस्तक-मणि' अभी आजाद है, ध्रुव!
उससे हम कुछ देर तक बचते रह सकते हैं!
ओह! अब ये मेरी मणि को भी जादुई बर्फ से ढक रहा है!
हमको आजाद होना पड़ेगा धनंजय!
तुम्हारा स्वर्ण-पाश! उसको तुम विचार तरंगों से भी संचालित कर सकते हो!
कर सकता हूं! लेकिन स्वर्ण-पाश तो पटपाद पर बेअसर है!
लेकिन बर्फ पर तो बेअसर नहीं है न! बर्फ को पाश से जकड़कर तोड़ दो!
आऽऽऽह! सचमुच!
इतनी आसानी से बच नहीं सकेगी, देव-मानव की जोड़ी!
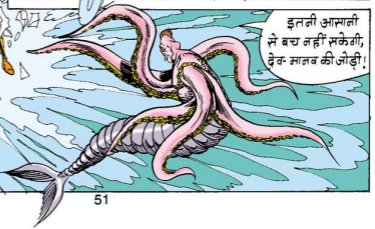
पहले मारूंगा देव को! क्योंकि वह मेरा कुछ देर तक प्रतिरोध कर सकता है! फिर मानव को तो मच्छर की तरह मसल दूंगा!
आऽऽऽह! इसकी भुजा पर बने छल्ले मेरे कवच को तोड़ रहे हैं!
आऽऽऽह! मेरी सारी शक्तियां बेकार साबित हो रही हैं!
अब तेरी बारी है मनुष्य! तेरे लिए तो एक ही छल्ला काफी होगा!
यह सच कह रहा है! मुझे इसकी कमजोरी ढूंढनी होगी! लेकिन ऐसा जीव तो देखा ही पहली बार गया है! छीछड़े के अलावा!
छीछड़ा! यस! अब मुझे इसकी एक कमजोरी समझ में आ रही है! उम्मीद है कि मेरे मुंह से निकली खास सीटी, पानी जैसे सघन माध्यम में तेजी से चलकर समुद्र तक जल्दी पहुंचेगी!...
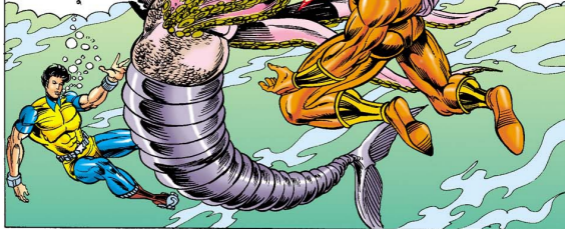
... और मदद जल्दी ही आएगी !
मदद आने में देर नहीं लगी-
अपनी जादुई शक्तियों की लाख कोशिशों के बावजूद भी षटपाद अपने आपको डॉल्फिनों के घातक हमले से बचा नहीं पाया-

यह कैसा चमत्कार है, ध्रुव? षटपाद, डॉल्फिनों से अपनी सुरक्षा क्यों नहीं कर पा रहा है? इसके पास तो जादुई शक्तियां हैं!
पाताल नगरी की जादुई शक्तियां कहां धनंजय!
जब मैं इससे बचने का उपाय सोच रहा था तो मेरे दिमाग में यह ख्याल आया कि चीछड़ा तो जादुई जल का स्पर्श होते ही राक्षस बन गया था!
लेकिन यह पानी तो यहां पर सदियों से था! जल में रहने वाले कई जीव-जन्तु इसके संपर्क में आते रहे होंगे!
लेकिन हमको इस नदी में किसी दैत्य मछली के देखे जाने की खबर कभी नहीं मिली! यानी पाताल नगरी का जादू जल-जन्तुओं पर असर नहीं करता था! शायद इसलिए, क्योंकि पाताल नगरी को खास तौर से मानवों को राक्षस बनाने के लिए बनाया गया था!
कमाल है, ध्रुव! अब हम समुद्री जीव-जन्तुओं की मदद से राक्षसों की इस नगरी को नष्ट कर देंगे!
यह ख्याल दिमाग में आते ही मैंने अपनी मित्र डॉल्फिनों की मदद के लिए बुला भेजा! और नतीजा तुम्हारे सामने है!
विभत्सू इसकी काट भी ढूंढ लेगा, धनंजय! उसको रोकने का सबसे अच्छा उपाय, मंत्रित जल को बाहर निकलने से रोकना है!
हमको तुरन्त जंगल के उस स्थान पर पहुंचना चाहिए, जहां पर जल को निकाला जा रहा है!
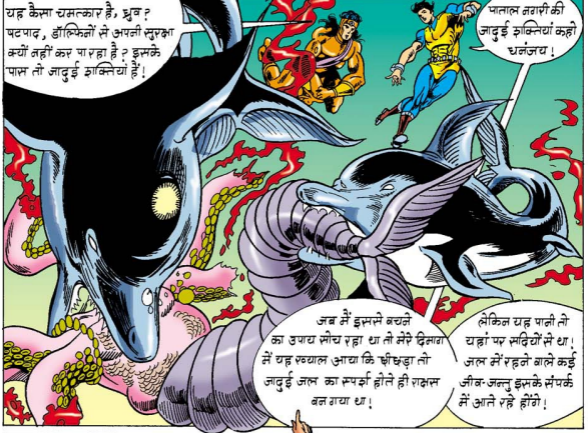
... वर्ना मौत तो ऐसे भी निश्चित है! और इस जादुई जल में भीग कर भी!

और-

वाह! जादू सचमुच खत्म हो रहा है! अब इससे पहले कि हंकारा का जादू खत्म हो जाए, और जल का जादू दुबारा मुझ पर चढ़ जाए, इस पानी से अलग हो जाना चाहिए!

नागराज! तू... तू ठीक हो गया!

हां! और इसका मतलब है कि अब तू बीमार पड़ने वाला है!
मेरी विष फुंकार को पीकर!
तेरी फुंकार के घातक प्रभाव को मैं जान चुका हूं!
इसलिए मैं तब तक अपनी सांस रोके रखूंगा, जब तक मेरा पानी निकालने का कार्य पूरा नहीं हो जाता!
अब मैं तेरे वारों से नहीं, बल्कि तू मेरे वारों से बचने की कोशिश करता फिरेगा नागराज!
ओह! इसको मैं एक घूंसे से बेहोश कर सकता हूं! लेकिन इसके पास तक पहुंचूं कैसे? हर जीवित वस्तु इसका जादुई वार खाकर खतरनाक प्राणी बन जाएगी! इसलिए न तो मैं अपने सर्पों का वार कर सकता हूं, और न ही पेड़-पत्तों तक का कवच बनाकर इस तक पहुंच सकता हूं! फिर क्या करूं?
ओह, हां! एक तरीका है! एक कवच है, जिस पर जादुई वार बेअसर साबित होंगे!

तू... तू केंचुली पहनकर मेरी तरफ बढ़ रहा है! इस पर मेरे जादुई वार बेअसर साबित हो रहे हैं!
जादुई जल का वार करता हूं!
जादुई जल भी इस पर असर नहीं कर रहा है! पर क्यों? क्यों?
क्योंकि मेरे शरीर से अलग होने के बाद ये केंचुली मृत हो गई है, हंकारा! और मृत चीजों को तुम्हारा जादू कोई खतरनाक रूप नहीं दे सकता!
ओह! सर घूम गया! अपने- आपको संभालना मुश्किल हो रहा है!
अब नागराज मुझ पर काबू पा लेगा! एक ही रास्ता है इसको रोकने का! पाताल-नगरी में घसीटकर ले जाना होगा इसको! फिर ये राक्षस बनने से बच नहीं पाएगा!

तभी-
धनंजय! यह तो... नागराज है! और एक राक्षस उसको जमीन के नीचे घसीटना चाहता है! शायद पाताल नगरी में!
हम ठीक समय पर पहुंचे हैं ध्रुव! यह हंकारा है! विभत्सु का खास सेवक! हमको नागराज को बचाना होगा!
एक रस्साकशी सी शुरू हो गई-
एक तरफ स्वर्णपाश की जकड़ थी-
तो दूसरी तरफ जादू की पकड़।
और इस दबाव से-
आऽऽऽह! मेरे... मेरे शरीर के दो हिस्से हो रहे हैं! मैं... मैं दो भागों में बंट रहा हूं!

दुश्मन नागराज

शीघ्र आ रहा है दो नागराजों और एक ध्रुव से युक्त यह विनाशकारी विशेषांक